

तुलसीदास और भानुभक्त की रामायणों में सीता और कैकेयी का चरित्र-चित्रण: काव्यात्मक अभिव्यक्ति और स्त्री-दृष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

Ms. Vaishali Shrivastava¹, Ms. Shruti Singhal², Ms. Aparna Arora³

¹TGT, Hindi, Scindia Kanya Vidyalaya Gwalior Madhya Pradesh

^{2,3}Student Class 11, Hindi, Scindia Kanya Vidyalaya Gwalior Madhya Pradesh

सारांश

रामकथा भारतीय साहित्य की अत्यंत समृद्ध और लोकप्रिय परंपराओं में से एक है। समय के साथ यह कथा अनेक भाषाओं और साहित्यिक परंपराओं में अलग-अलग रूपों में प्रस्तुत हुई है। गोस्वामी तुलसीदास की *रामचरितमानस* और भानुभक्त आचार्य की *रामायण* इसी व्यापक रामकथा परंपरा की दो महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं। दोनों रचनाओं में रामकथा का मूल आधार समान दिखाई देता है, लेकिन दोनों कवियों की भाषा, साहित्यिक दृष्टि और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि अलग होने के कारण पात्रों की प्रस्तुति में भी कुछ अंतर दिखाई देते हैं। प्रस्तुत शोध में तुलसीदास और भानुभक्त की रामायणों में सीता और कैकेयी के चरित्र-चित्रण का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। सीता के चरित्र में प्रेम, निष्ठा, त्याग, धैर्य, आत्मसम्मान और कठिन परिस्थितियों का सामना करने की क्षमता जैसे पक्षों का अध्ययन किया गया है। दूसरी ओर, कैकेयी के चरित्र में मातृत्व, इच्छा, निर्णय, परिस्थितियों का प्रभाव और पश्चात्ताप जैसे पक्षों को समझने का प्रयास किया गया है। इस अध्ययन का उद्देश्य इन दोनों स्त्री पात्रों को केवल आदर्श और नकारात्मक चरित्र के रूप में देखने के बजाय उनके मानवीय और भावनात्मक पक्षों को भी समझना है। शोध में दोनों रचनाओं के प्रमुख प्रसंगों, संवादों, भावों और पात्रों के व्यवहार का अध्ययन किया गया है। साथ ही भाषा, भावात्मक वर्णन, उपमा, रूपक, बिंब तथा अन्य काव्यात्मक साधनों की भूमिका को भी समझने का प्रयास किया गया है। तुलनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि दोनों कवियों ने स्त्री पात्रों को कथा के लिए महत्वपूर्ण स्थान दिया है। तुलसीदास की प्रस्तुति में धर्म, भक्ति और मर्यादा का पक्ष अधिक स्पष्ट दिखाई देता है, जबकि भानुभक्त की प्रस्तुति में सरल भाषा और पारिवारिक तथा भावनात्मक पक्ष सहज रूप में सामने आते हैं।

मूल शब्द: तुलसीदास, भानुभक्त आचार्य, रामचरितमानस, रामायण, सीता, कैकेयी, स्त्री-दृष्टि, चरित्र-चित्रण, काव्यात्मक अभिव्यक्ति, तुलनात्मक अध्ययन।

प्रस्तावना

रामकथा भारतीय साहित्य की सबसे प्रभावशाली और लंबे समय से चली आ रही कथात्मक परंपराओं में से एक है। यह केवल धार्मिक कथा के रूप में ही महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि भारतीय समाज, संस्कृति, नैतिक मूल्यों और मानवीय संबंधों को समझने का एक महत्वपूर्ण माध्यम भी है। समय के साथ रामकथा अनेक भाषाओं और साहित्यिक परंपराओं में अलग-अलग रूपों में प्रस्तुत होती रही है। प्रत्येक कवि ने अपने समय, समाज, भाषा और साहित्यिक

दृष्टिकोण के अनुसार इसके पात्रों और घटनाओं को अपने ढंग से अभिव्यक्त किया। इसी कारण रामकथा के विभिन्न रूपों का तुलनात्मक अध्ययन साहित्य की विविधता को समझने में उपयोगी है। गोस्वामी तुलसीदास भक्तिकाल के प्रमुख कवियों में से एक हैं। उनकी *रामचरितमानस* अवधी भाषा में रचित महत्वपूर्ण रामकाव्य है। इसमें रामकथा को भक्ति, धर्म, मर्यादा और मानवीय भावनाओं के साथ प्रस्तुत किया गया है। तुलसीदास के यहाँ राम केवल कथा के नायक नहीं हैं, बल्कि आदर्श और मर्यादा के प्रतीक भी हैं। इसलिए उनसे जुड़े स्त्री पात्रों का चरित्र-चित्रण भी परिवार, कर्तव्य, धर्म और सामाजिक मर्यादा के संदर्भ में सामने आता है।

भानुभक्त आचार्य नेपाली साहित्य के प्रमुख कवियों में माने जाते हैं और उन्हें 'आदिकवि' के रूप में विशेष सम्मान प्राप्त है। उन्होंने रामकथा को नेपाली भाषा में काव्यात्मक रूप प्रदान किया। उनकी *भानुभक्तको रामायण* ने रामकथा को नेपाली भाषी पाठकों तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस रचना में रामकथा को नेपाली भाषा और काव्यात्मक शैली में प्रस्तुत किया गया है। सीता और कैकेयी दोनों रामकथा की महत्वपूर्ण स्त्री पात्र हैं, लेकिन दोनों के व्यक्तित्व और कथा में उनकी भूमिकाएँ अलग-अलग हैं। सीता का चरित्र प्रेम, निष्ठा, त्याग, धैर्य, संघर्ष और आत्मसम्मान जैसे अनेक पक्षों से जुड़ा है। दूसरी ओर, कैकेयी के चरित्र में मातृत्व, इच्छा, निर्णय, परिस्थितियों का प्रभाव और पश्चात्ताप जैसे पक्ष दिखाई देते हैं। इसलिए इन दोनों पात्रों का एक साथ अध्ययन करने से रामकथा में स्त्री के अलग-अलग रूपों को समझने में सहायता मिलती है।

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य यह समझना है कि तुलसीदास और भानुभक्त ने सीता तथा कैकेयी के चरित्रों को किस प्रकार प्रस्तुत किया है। उनके संवादों, भावों, निर्णयों और परिस्थितियों के माध्यम से उनके व्यक्तित्व को किस प्रकार सामने लाया गया है, इसका अध्ययन किया गया है। इसके साथ ही दोनों कवियों की भाषा और काव्यात्मक अभिव्यक्ति में दिखाई देने वाली समानताओं और भिन्नताओं को समझने का प्रयास किया गया है। इस अध्ययन का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह भी है कि स्त्री पात्रों को केवल उनके बाहरी कार्यों के आधार पर न देखकर उनकी भावनाओं और परिस्थितियों के आधार पर समझा जाए। सीता और कैकेयी दोनों ही कथा की दिशा को प्रभावित करती हैं, लेकिन अलग-अलग तरीकों से। इस कारण उनका अध्ययन रामकथा की साहित्यिक संरचना को समझने में भी सहायक है।

शोध-पद्धति

प्रस्तुत शोध तुलनात्मक अध्ययन की पद्धति पर आधारित है। इसमें तुलसीदास की *रामचरितमानस* और भानुभक्त आचार्य की *रामायण* को मुख्य आधार बनाया गया है। दोनों रचनाओं में सीता और कैकेयी से जुड़े प्रमुख प्रसंगों का अध्ययन करके उनके चरित्र, भावनाओं, निर्णयों और कथा में उनकी भूमिका को समझने का प्रयास किया गया है। इस शोध में मुख्य रूप से पाठ-आधारित अध्ययन की पद्धति अपनाई गई है। सीता और कैकेयी से जुड़े प्रसंगों, संवादों और उनके व्यवहार का अध्ययन किया गया है। सीता के संदर्भ में वनगमन, वन-जीवन, स्वर्ण-मृग, सीता-हरण, अशोक वाटिका, हनुमान से भेंट, मुक्ति, अयोध्या वापसी तथा बाद के प्रसंगों को अध्ययन का आधार बनाया गया है। कैकेयी के संदर्भ में उनके प्रारंभिक व्यक्तित्व, मंथरा के प्रभाव, वरदान माँगने, राम के वनवास, दशरथ की मृत्यु, भरत की प्रतिक्रिया और बाद के पश्चात्ताप से जुड़े प्रसंगों का अध्ययन किया गया है।

शोध में दोनों रचनाओं की भाषा और काव्यात्मक अभिव्यक्ति पर भी ध्यान दिया गया है। पात्रों के चरित्र को प्रभावशाली बनाने में संवाद, भाव-चित्रण, उपमा, रूपक, बिंब तथा अन्य काव्यात्मक साधनों की भूमिका को समझने का प्रयास किया गया है। इसके आधार पर दोनों कवियों की अभिव्यक्ति में दिखाई देने वाली समानताओं और भिन्नताओं का अध्ययन किया गया है। तुलनात्मक पद्धति के अंतर्गत दोनों रचनाओं में सीता और कैकेयी के चरित्रों को समान आधारों पर देखा गया है। उनके गुणों, भावनाओं, निर्णयों, पारिवारिक संबंधों और कथा पर उनके प्रभाव की

तुलना की गई है। साथ ही दोनों कवियों के अलग-अलग भाषाई और सांस्कृतिक संदर्भों को ध्यान में रखा गया है, ताकि तुलना केवल कथानक तक सीमित न रहे।

इस शोध में वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक दोनों दृष्टियों का प्रयोग किया गया है। किसी एक कवि को दूसरे से श्रेष्ठ सिद्ध करना इसका उद्देश्य नहीं है। इसके बजाय दोनों रचनाओं में स्त्री पात्रों की साहित्यिक प्रस्तुति को समझने का प्रयास किया गया है। उपलब्ध मूल ग्रंथों तथा संबंधित साहित्यिक अध्ययनों को आधार बनाकर निष्कर्ष तक पहुँचने का प्रयास किया गया है।

सीता का चरित्र-चित्रण

सीता रामकथा की सबसे महत्वपूर्ण स्त्री पात्रों में से एक हैं। तुलसीदास की *रामचरितमानस* में उनका चरित्र प्रेम, निष्ठा, त्याग, धैर्य और मर्यादा से जुड़ा हुआ दिखाई देता है। राम के वनवास का निर्णय होने पर सीता राजमहल में रहने के बजाय राम के साथ वन जाने का निर्णय लेती हैं। यह निर्णय उनके राम के प्रति प्रेम और निष्ठा को व्यक्त करता है, लेकिन इसके साथ उनके अपने निर्णय की दृढ़ता भी दिखाई देती है। वनगमन सीता के चरित्र का महत्वपूर्ण प्रसंग है। राजमहल की सुख-सुविधाओं को छोड़कर वन के कठिन जीवन को स्वीकार करना उनके धैर्य और त्याग को दिखाता है। वन में उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, फिर भी वे अपने परिवार और संबंधों से जुड़ी रहती हैं। इस प्रसंग में सीता केवल परिस्थितियों को स्वीकार करने वाली स्त्री नहीं हैं, बल्कि अपने जीवन से संबंधित महत्वपूर्ण निर्णय लेने वाली स्त्री भी हैं। वन जीवन के दौरान स्वर्ण-मृग का प्रसंग सीता के मानवीय पक्ष को सामने लाता है। उनकी इच्छा के कारण कथा एक नए मोड़ पर पहुँचती है। इसके बाद रावण द्वारा उनका हरण किया जाता है और उन्हें लंका ले जाया जाता है। अशोक वाटिका में सीता का चरित्र विशेष रूप से दृढ़ दिखाई देता है। वे कठिन परिस्थितियों में अकेली हैं, लेकिन रावण के दबाव के सामने अपने निर्णय और विश्वास से पीछे नहीं हटतीं। उनका आत्मसम्मान बना रहता है। इस प्रकार सीता केवल दुख सहने वाली स्त्री के रूप में नहीं, बल्कि मानसिक रूप से दृढ़ और अपने निर्णय पर कायम रहने वाली स्त्री के रूप में भी सामने आती हैं।

हनुमान से भेंट का प्रसंग भी उनके चरित्र को समझने में महत्वपूर्ण है। हनुमान उन्हें राम का संदेश देते हैं और उन्हें अपने साथ ले जाने की संभावना रखते हैं, लेकिन सीता स्वयं राम के आने को उचित मानती हैं। इस निर्णय में उनका आत्मसम्मान और परिस्थिति को समझने की क्षमता दिखाई देती है। लंकाविजय के बाद सीता से जुड़े प्रसंगों में सामाजिक प्रतिष्ठा, स्त्री की स्थिति और व्यक्तिगत गरिमा जैसे प्रश्न सामने आते हैं। बाद में जब उन्हें अयोध्या से दूर जाना पड़ता है, तब उनके जीवन में एक और कठिन परिस्थिति आती है। वाल्मीकि आश्रम में रहते हुए वे अपने बच्चों का पालन करती हैं। इस समय उनका मातृत्व, धैर्य और आत्मसम्मान सामने आता है। सीता का अंतिम निर्णय उनके चरित्र को और अधिक गंभीर बनाता है। धरती में समाने का प्रसंग उनके जीवन में लगातार आए सामाजिक दबाव और व्यक्तिगत गरिमा के प्रश्न से जुड़ा हुआ दिखाई देता है। इसलिए सीता के चरित्र को केवल आदर्श पत्नी के रूप में सीमित करना उनके व्यक्तित्व के सभी पक्षों को सामने नहीं ला पाता।

भानुभक्त की रामायण में भी सीता रामकथा की केंद्रीय स्त्री पात्र हैं। उनके चरित्र में राम के प्रति प्रेम, निष्ठा और कठिन परिस्थितियों को सहने की क्षमता दिखाई देती है। उनकी पीड़ा और भावनाओं को काव्यात्मक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। भानुभक्त की भाषा की सहजता के कारण सीता के भाव पाठक के सामने सरल रूप में आते हैं। दोनों रचनाओं में सीता के चरित्र की मूल विशेषताओं में समानता दिखाई देती है। दोनों में प्रेम, निष्ठा, धैर्य और संघर्ष प्रमुख हैं। अंतर मुख्य रूप से अभिव्यक्ति के ढंग में दिखाई देता है। तुलसीदास के यहाँ सीता का चरित्र भक्ति, मर्यादा और आदर्श से अधिक जुड़ा दिखाई देता है, जबकि भानुभक्त की प्रस्तुति में पारिवारिक और भावनात्मक पक्ष अधिक सहज रूप में सामने आता है।

कैकेयी का चरित्र-चित्रण

कैकेयी रामकथा की अत्यंत महत्वपूर्ण स्त्री पात्र हैं। उनका चरित्र सीता से बिल्कुल अलग है। सामान्य रूप से उन्हें राम के वनवास का कारण बनने वाली रानी के रूप में याद किया जाता है, लेकिन साहित्यिक दृष्टि से उनका चरित्र इससे अधिक जटिल है। कैकेयी प्रारंभ में दशरथ की प्रिय रानी और भरत की माता के रूप में सामने आती हैं। उनके व्यक्तित्व में मातृत्व और पारिवारिक संबंधों का विशेष महत्व है। जब मंथरा उन्हें राम के राज्याभिषेक के विषय में प्रभावित करती है, तब उनके मन में भरत के भविष्य को लेकर चिंता और आशंका उत्पन्न होती है। कैकेयी द्वारा दो वरदानों का उपयोग करके राम को वनवास और भरत को राज्य देने की मांग करना कथा का निर्णायक मोड़ है। उनके इस निर्णय के पीछे मातृत्व, इच्छा, मोह और परिस्थितियों का प्रभाव दिखाई देता है। इस निर्णय के कारण पूरी कथा की दिशा बदल जाती है। राम के वन जाने और दशरथ की मृत्यु के बाद कैकेयी के निर्णय का परिणाम उनके सामने स्पष्ट होता है। भरत स्वयं इस निर्णय का समर्थन नहीं करते। इससे कैकेयी के चरित्र में पश्चात्ताप का पक्ष सामने आता है। इस प्रकार उनका चरित्र एक ही अवस्था में स्थिर नहीं रहता, बल्कि घटनाओं के साथ बदलता है।

भानुभक्त की रामायण में भी कैकेयी का चरित्र कथा को आगे बढ़ाने वाला महत्वपूर्ण पात्र है। उनके निर्णय के कारण राम का वनवास होता है और कथा का नया चरण आरंभ होता है। उनके चरित्र में मातृत्व और व्यक्तिगत इच्छा के बीच का तनाव दिखाई देता है। इस प्रकार कैकेयी को केवल नकारात्मक पात्र मानने के बजाय उनके निर्णय और परिस्थितियों को समझना अधिक उचित है। सीता और कैकेयी दोनों स्त्रियाँ कथा को प्रभावित करती हैं, लेकिन उनके प्रभाव का स्वरूप अलग है। सीता अपने निर्णय और धैर्य से कथा के भावात्मक पक्ष को मजबूत करती हैं, जबकि कैकेयी अपने निर्णय के माध्यम से कथा की राजनीतिक और पारिवारिक दिशा बदल देती हैं।

सीता और कैकेयी का तुलनात्मक अध्ययन

सीता और कैकेयी दोनों ही रामकथा की महत्वपूर्ण स्त्री पात्र हैं, लेकिन उनके चरित्र में स्पष्ट अंतर दिखाई देता है। सीता का चरित्र मुख्य रूप से प्रेम, निष्ठा, धैर्य, त्याग और आत्मसम्मान से जुड़ा है। कैकेयी का चरित्र मातृत्व, इच्छा, निर्णय, मोह और पश्चात्ताप से जुड़ा हुआ दिखाई देता है। सीता कठिन परिस्थितियों का सामना करती हैं और अपनी गरिमा बनाए रखती हैं। वे अपने जीवन से जुड़े महत्वपूर्ण निर्णय स्वयं व्यक्त करती हैं। दूसरी ओर, कैकेयी का एक निर्णय राम के वनवास का कारण बनता है और पूरी कथा की दिशा बदल जाती है। दोनों पात्रों में एक समानता यह है कि वे केवल कथा की सहायक स्त्रियाँ नहीं हैं। उनके निर्णय और भावनाएँ कथा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सीता के बिना रामकथा का भावात्मक स्वरूप अधूरा है और कैकेयी के निर्णय के बिना राम के वनवास की कथा उसी रूप में आगे नहीं बढ़ती। सीता के चरित्र में संघर्ष के बीच धैर्य और आत्मसम्मान दिखाई देता है। कैकेयी के चरित्र में निर्णय के बाद उत्पन्न होने वाला पश्चात्ताप दिखाई देता है। इस प्रकार दोनों स्त्रियाँ अलग-अलग प्रकार के मानवीय अनुभवों को सामने लाती हैं। इन दोनों पात्रों को केवल "आदर्श" और "नकारात्मक" स्त्री के रूप में बाँटना उचित नहीं होगा। सीता के चरित्र में भी मानवीय भावनाएँ और कठिन निर्णय हैं, जबकि कैकेयी के चरित्र में भी मातृत्व और पश्चात्ताप जैसे मानवीय पक्ष हैं। यही जटिलता उन्हें साहित्यिक रूप से महत्वपूर्ण बनाती है।

स्त्री-दृष्टि और काव्यात्मक अभिव्यक्ति

तुलसीदास और भानुभक्त दोनों की रचनाओं में स्त्री पात्र केवल कथा को आगे बढ़ाने का साधन नहीं हैं। उनके माध्यम से प्रेम, परिवार, कर्तव्य, पीड़ा, निर्णय और सामाजिक परिस्थितियों जैसे विषय सामने आते हैं। तुलसीदास की *रामचरितमानस* में धर्म, भक्ति और मर्यादा का प्रभाव स्पष्ट है। सीता का चरित्र आदर्श, निष्ठा और धैर्य से जुड़ा है, लेकिन उनके निर्णय और आत्मसम्मान के पक्ष भी दिखाई देते हैं। कैकेयी के माध्यम से मोह, निर्णय और उसके

नैतिक परिणामों को प्रस्तुत किया गया है।

भानुभक्त की रामायण में भी स्त्री पात्रों के भावनात्मक और पारिवारिक पक्ष को महत्व मिलता है। नेपाली भाषा की सहजता के कारण पात्रों की भावनाएँ पाठक तक सीधे पहुँचती हैं। सीता के प्रेम और पीड़ा तथा कैकेयी के मातृत्व और निर्णय को समझने में संवाद और भावात्मक वर्णन महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। काव्यात्मक अभिव्यक्ति दोनों रचनाओं में चरित्र-निर्माण का महत्वपूर्ण साधन है। संवाद पात्रों के मन की स्थिति को सामने लाते हैं। उपमा, रूपक और बिंब जैसे साधन भावों को अधिक प्रभावशाली बनाते हैं। तुलसीदास की भाषा में भक्ति और भावात्मकता का प्रभाव अधिक दिखाई देता है, जबकि भानुभक्त की अभिव्यक्ति में सरलता और सहज काव्यात्मक प्रवाह महत्वपूर्ण है।

स्त्री-दृष्टि के संदर्भ में दोनों रचनाओं का अध्ययन करते समय उनके समय और सामाजिक संदर्भ को ध्यान में रखना आवश्यक है। आधुनिक अर्थों में 'नारीवाद' जैसी अवधारणाओं को सीधे इन पुराने ग्रंथों पर लागू करना उचित नहीं होगा। इसके बजाय यह देखना अधिक उपयोगी है कि इन रचनाओं में स्त्री पात्रों को कितनी भावनात्मक, निर्णयात्मक और मानवीय भूमिका दी गई है। इस दृष्टि से सीता और कैकेयी दोनों महत्वपूर्ण बन जाती हैं। सीता परिस्थितियों के बीच अपने निर्णय और गरिमा को बनाए रखती हैं, जबकि कैकेयी अपने निर्णय से पूरी कथा की दिशा बदल देती हैं। दोनों पात्र यह सिद्ध करते हैं कि रामकथा में स्त्री पात्रों की भूमिका केवल पारिवारिक संबंधों तक सीमित नहीं है।

शोध की सीमाएँ

प्रस्तुत शोध में मुख्य रूप से तुलसीदास की *रामचरितमानस* और भानुभक्त की *रामायण* में सीता और कैकेयी के चरित्रों का अध्ययन किया गया है। इसलिए रामकथा के अन्य स्त्री पात्रों और अन्य सभी प्रसंगों का विस्तृत अध्ययन इसमें शामिल नहीं किया गया है। इस शोध का मुख्य केंद्र चरित्र-चित्रण, भावनाएँ, निर्णय, स्त्री-दृष्टि और काव्यात्मक अभिव्यक्ति है। दोनों रचनाओं की संपूर्ण भाषिक, छंदगत और साहित्यिक संरचना का विस्तृत अध्ययन इस शोध के क्षेत्र में नहीं है। इसके अतिरिक्त, दोनों रचनाओं की अलग-अलग भाषाई और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए केवल उन पक्षों पर विशेष ध्यान दिया गया है जो सीता और कैकेयी के तुलनात्मक अध्ययन के लिए आवश्यक हैं।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध के माध्यम से तुलसीदास और भानुभक्त की रामायणों में सीता और कैकेयी के चरित्र-चित्रण का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि दोनों कवियों ने इन स्त्री पात्रों को केवल कथा के सहायक पात्रों के रूप में प्रस्तुत नहीं किया है। उनके भाव, निर्णय और परिस्थितियाँ कथा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

सीता के चरित्र में प्रेम, निष्ठा, धैर्य, त्याग और आत्मसम्मान जैसे पक्ष दिखाई देते हैं। वे कठिन परिस्थितियों में भी अपने व्यक्तित्व की दृढ़ता बनाए रखती हैं। उनके जीवन में आने वाली विभिन्न परिस्थितियाँ उनके चरित्र के अलग-अलग पक्षों को सामने लाती हैं।

कैकेयी के चरित्र में मातृत्व, इच्छा, निर्णय और पश्चात्ताप के विभिन्न रूप दिखाई देते हैं। उनका एक निर्णय राम के वनवास का कारण बनता है और पूरी कथा को बदल देता है। लेकिन बाद की परिस्थितियाँ यह भी दिखाती हैं कि कैकेयी के चरित्र को केवल नकारात्मक रूप में समझना पर्याप्त नहीं है।

तुलनात्मक अध्ययन से यह भी सामने आता है कि तुलसीदास की प्रस्तुति में धर्म, भक्ति और मर्यादा का पक्ष अधिक स्पष्ट है। भानुभक्त की प्रस्तुति में सरलता, पारिवारिक संबंधों और भावनात्मक अभिव्यक्ति का पक्ष अधिक सहज

रूप में सामने आता है। दोनों की भाषा और साहित्यिक शैली अलग होने के बावजूद दोनों ने स्त्री पात्रों के भावों को महत्व दिया है। सीता और कैकेयी को साथ रखकर देखने पर स्त्री जीवन के दो अलग अनुभव सामने आते हैं। सीता कठिन परिस्थितियों में धैर्य और आत्मसम्मान का परिचय देती हैं, जबकि कैकेयी अपने निर्णय और उसके परिणामों के बीच संघर्ष करती दिखाई देती हैं। दोनों पात्रों में मानवीय भावनाओं की जटिलता मौजूद है।

अतः सीता और कैकेयी को केवल आदर्श और नकारात्मक स्त्री के दो अलग रूपों में बाँटना उचित नहीं है। दोनों पात्रों को उनके समय, परिस्थितियों, भावनाओं और निर्णयों के संदर्भ में समझना अधिक उचित है। यही दृष्टि तुलसीदास और भानुभक्त की रामायणों में स्त्री-चरित्रों की साहित्यिक महत्ता को समझने में सहायता करती है।

इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि रामकथा की अलग-अलग साहित्यिक परंपराएँ एक ही कथा और पात्रों को नए अर्थ प्रदान कर सकती हैं। तुलसीदास और भानुभक्त की रचनाओं में सीता और कैकेयी का तुलनात्मक अध्ययन इस बात को स्पष्ट करता है कि साहित्य में स्त्री पात्र केवल कथा का हिस्सा नहीं होते, बल्कि वे कथा के भावात्मक, सामाजिक और नैतिक अर्थों को भी प्रभावित करते हैं।

संदर्भ-सूची

1. तुलसीदास। *रामचरितमानस*। गोरखपुर: गीता प्रेस।
2. भानुभक्त आचार्य। *भानुभक्तको रामायण*। काठमांडू: साझा प्रकाशन।
3. पौडेल, रामचन्द्र। *संस्कृत अध्यात्म रामायण र भानुभक्तीय रामायणको तुलनात्मक अध्ययन*। नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान।